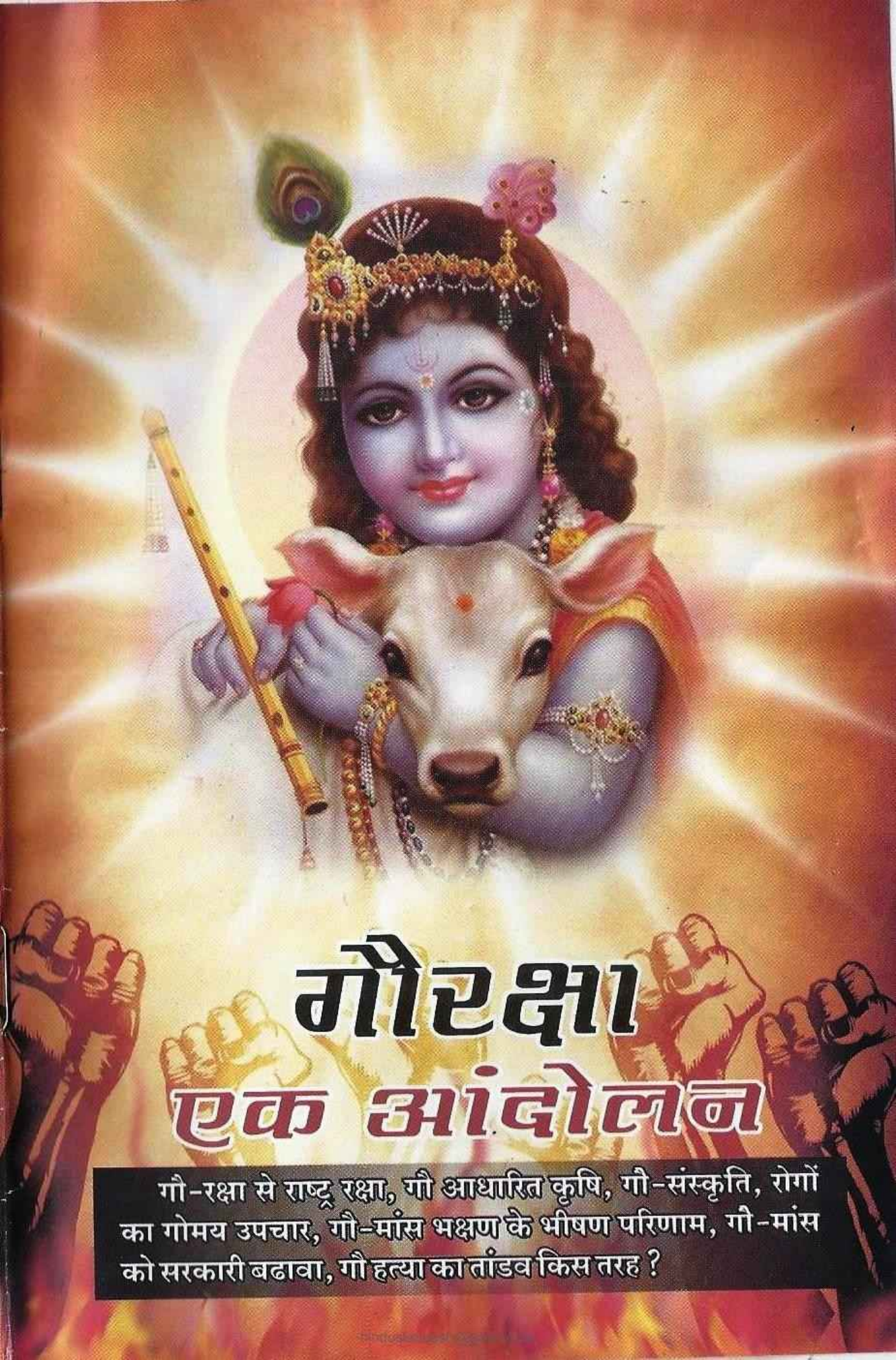

गौरक्षा
एक आंदोलन

गौ-रक्षा से राष्ट्र रक्षा, गौ आधारित कृषि, गौ-संस्कृति, रोगों का गोमय उपचार, गौ-मांस भक्षण के भीषण परिणाम, गौ-मांस को सरकारी बढावा, गौ हत्या का तांडव किस तरह ?

दिन भर रोजा राख के रात काटते गाय ।
एक खून, एक बन्दगी कैसे खुशी खुदाय ।।
– सन्त कबीर दास

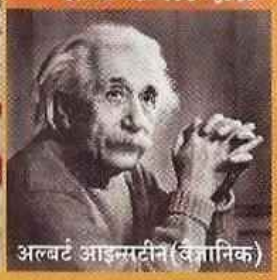

कत्लखाने बदल देते हैं दूध की धार को खून के घिनौने धब्बों में। आपको मांस की जरूरत बिल्कुल नहीं है क्योंकि यह आपकी तन्दुरस्ती, आपकी पशु सम्पदा, और आपके राष्ट्रीय अर्थ तन्त्र के लिये अभिशाप है।

अल्बर्ट आइन्सटीन (वैज्ञानिक)

अल्बर्ट आइन्सटीन (वैज्ञानिक)

* इस देश में गौहत्या नहीं चल सकती। गौ-हत्या जारी रही तो देश में बगावत होगी। – संत विनोबा भावे
* भारतीय संविधान में पहली धारा सम्पूर्ण गौ-हत्या निषेध होनी चाहिये। – पं.मदन मोहन मालवीय जी
* यदि संसार में हिन्दू कहला कर जीवित रहना चाहते हैं तो सर्वप्रथम प्राणप्रण से हमें गौरक्षा करनी होगी। – पूज्य प्रभुदत्त ब्रह्मचारी
* सरकार की गौहत्या नीति का कड़ाविरोध करना चाहिये और वोट उनको ही देना चाहिये जो देश में पूर्ण रूप से गौ हत्या बंद करने का वचन दें। – स्वामी रामसुखदास जी

संस्कृति रक्षक संघ के सेवा आयोजन

पाश्चात्य संस्कृति का विरोध

कत्लखानों के विरोध में धरना

गौ-रक्षा जागृति यात्रा

ध्यान योग-शिविर

विद्यार्थी उत्कर्ष केंद्र

अन्नक्षेत्र, भंडारा

युवा जागृति अभियान

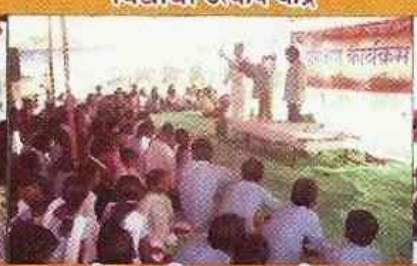

योग-प्रशिक्षण कार्यक्रम

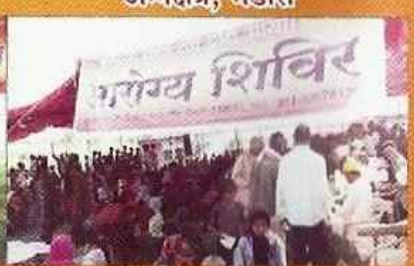

आरोग्य शिविर

गाय की सुरक्षा, सर्वस्व की रक्षा

जन्मदात्री माँ तो मात्र शिशु-अवस्था में ही पयपान कराती है परंतु गौमाता तो आजीवन हमें अपने दूध-दही-मक्खन आदि से पोषित करती है। उसका उपकार किस प्रकार चुकाया जा सकता है ? अपने इन सुंदर उपहारों से वह जीवन भर हमारा हित करती है । फिर भी गौमाता की उपयोगिता से अनभिज्ञ होकर सरकार की गलत नीतियों के कारण तथा मात्र उसके पालन-पोषण का खर्च वहन न कर पाने के बहाने उन्हें कत्लखानों के हवाले करना विकास का कौन-सा मापदंड है ? क्या गौमाता के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है ?

एशिया का सबसे बड़ा कत्लखाना भारत में !!!

सदियों से अहिंसा का पुजारी भारतवर्ष आज हिंसक और मुख्य मांस-निर्यातक देश के रूप में उभरता जा रहा है । हिन्दूबहुल समाज होने के बावजूद गोवंश की हत्या जारी है। यह बड़ी विडम्बना है कि एशिया का सबसे बड़ा कत्लखाना 'देवनार' अन्य इस्लामिक देशों में नहीं बल्कि भारत के महाराष्ट्र प्रांत में है, जहाँ हजारों गायें रोज कटती हैं। दूसरा अल-कबीर कत्लखाना आंध्रप्रदेश में है। इनका हजारों-हजारों टन मांस विदेशों में निर्यात होता है।

hindustandesh@gmail.com

पूज्य गौमाता के साथ ऐसी निर्दयता !

क्या आप जानते हैं जिस गौमाता की आप पूजा करते हैं, उसे किस प्रकार

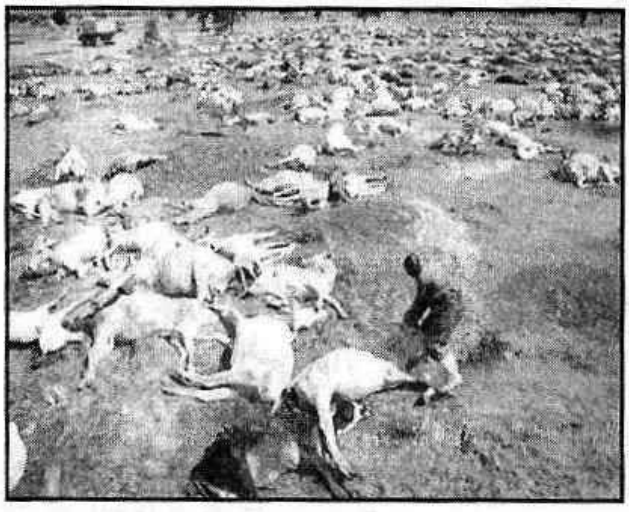

निर्दयतापूर्वक मारा जाता है ?

कत्लखाने में गौओं को मौत के कुएँ में ४ दिन तक भूखा रखा जाता है। अशक्त होकर गिरने पर घसीटते हुए मशीन के पास ले जाकर उन्हें पीट-पीटकर खड़ा किया जाता है। मशीन की एक पुली (मशीन का पकड़नेवाला एक हिस्सा) गाय के पिछले पैरों को जकड़ लेती है। तत्पश्चात् खौलता हुआ पानी ५ मिनट तक उस पर गिराया जाता है। पुली पिछले पैरों को ऊपर उठा देती है। जिससे गायें उलटी लटक जाती हैं। फिर इन गायों की आधी गर्दन काट दी जाती है ताकि खून बाहर आ जाय लेकिन गाय मरे नहीं। तत्काल गाय के पेट में एक छेद करके हवा भरी जाती है, जिससे गाय का शरीर फूल जाता है। उसी समय चमड़ा उतारने का कार्य होता है। गर्भवाले पशु का पेट फाड़कर जिंदा बच्चे को बाहर निकाला जाता है। उसके नर्म चमड़े (काफ-लेदर) को बहुत महँगे दामों में बेचा जाता है।

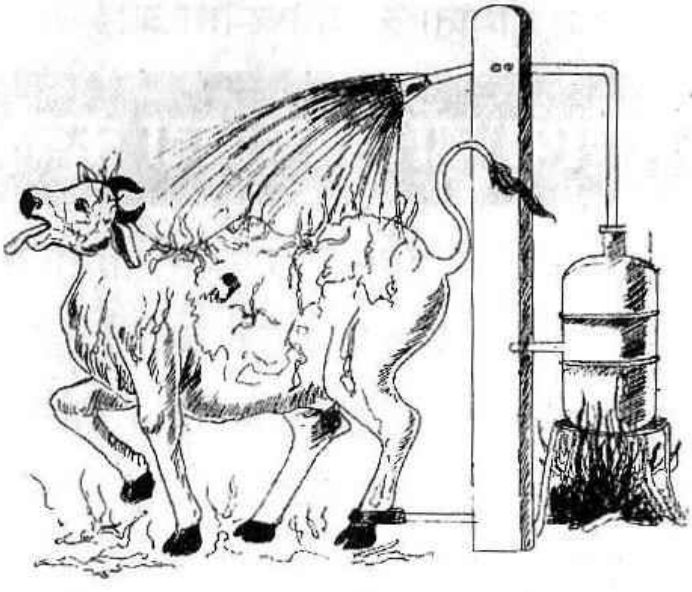

आज देश में वैध तथा अवैधरूप से हजारों कत्लखाने चल रहे हैं, जिनमें प्रतिदिन लाखों की संख्या में पशुधन काटा जाता है।

hindustandesh@gmail.com

गौहत्या का बदला चुकाना पड़ेगा

गाय मरी तो बचता कौन ? गाय बची तो मरता कौन ?

दिल्ली विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों डॉ. मदनमोहन बजाज, डॉ. अब्राहम तथा अन्य वैज्ञानिक डॉ. विजय राज ने अपने शोधों से यह साबित कर दिया है कि "पृथ्वी पर भूकम्प एवं सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाएँ तथा सोये हुए ज्वालामुखी फूट पड़ना अधिकांशतः ई.पी. वेव्स के कारण ही होता है। ये वेव्स गाय एवं अन्य प्राणियों को कत्ल करते समय उत्पन्न दारुण वेदना एवं चीत्कार से निकलती हैं।" कटती गायों की चीत्कार से पृथ्वी की रक्षा-कवच कही जानेवाली ओजोन परत में २ करोड़ ७० लाख वर्ग किलोमीटर का छिद्र हो गया है। यदि गायों की हत्या इसी प्रकार चलती रही तो सन् २०२० तक प्रलय की सम्भावनाएँ निश्चित हैं। पशुहत्या के कारण धरती का तापमान लगातार बढ़ता ही जा रहा है।

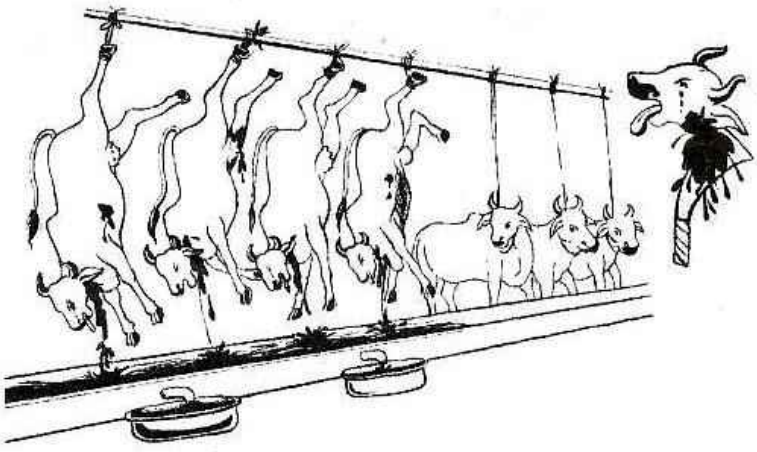

क्या आप जानते हैं ?

देश की आजादी के समय था - ९० करोड़ गोधन

सन् २००० में रह गया - १० करोड़

सन् २०१० में रह गया - लगभग १ करोड़

गौमाता चराचर जगत की माता हैं। इनकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। **अथर्ववेद में आता है : गौहत्यारे को काँच की गोली से उड़ा दो।** अतः हे भारतवासियो ! जागो और गोवंश की हत्या रोकने के

hindustandesh@gmail.com

लिए आगे आओ। गौमाता धरती का गौरव है।

भारत की ४० करोड़ एकड़ भूमि पर पैदावार तथा छोटे-बड़े भूखंडों के अनुकूल कृषिकार्य मात्र गोवंश ही कर सकता है। गायों से प्राप्त विभिन्न पदार्थों से विभिन्न उत्पाद बनाये जाते हैं जो मानव-जीवन के लिए अति आवश्यक हैं।

गाय धरती का वरदान, जिसकी महिमा महान

* गौमाता के दर्शन एवं गाय के खुरों की धूलि मस्तक पर लगाने से भाग्य की रेखाएँ बदल जाती हैं, घर में सुख-समृद्धि एवं शांति बनी रहती है।
* जहाँ पर गौएँ रहती हैं उस स्थान को तीर्थभूमि कहा गया है, ऐसी भूमि में जिस मनुष्य की मृत्यु होती है उसकी तत्काल सद्गति हो जाती है, यह निश्चित है। **- (ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्म खंड : २१.९१-९३)**
* गो-ग्रास देने तथा गाय की परिक्रमा करने से मनोकामना सिद्ध होती है, धन-संपदा स्थिर रहती है तथा अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

* गाय को प्रेम से सहलाने से ग्रहबाधा, पीड़ा, कष्ट आदि दूर होते हैं।
* गौ के शरीर के रोम-रोम से गूगल जैसी पवित्र सुगंध आती है। उसके शरीर से अनेक प्रकार की वायु निकलती है जो वातावरण को जंतुरहित करके पवित्र बनाती है।

hindustandesh@gmail.com

।। यज्ञ से जीवन रक्षा ।।

देशी गाय के गोबर के कण्डों पर गाय का घी, जौ, तिल, चावल और मिश्री अथवा शक्कर डालकर हवन किया जाता है तो महत्वपूर्ण गैसें उत्पन्न होती हैं। उनमें से एक प्रोपिलीन ऑक्साईड गैस बरसात लाने में सहायक होती है । 'इथिलीन ऑक्साइड' का गैस संक्रामक रोगों में एवं जीवनरक्षक दवाओं के रूप में प्रयोग होता है। इससे पर्यावरण शुद्ध, पवित्र तथा आरोग्यप्रद बनता है। इसलिए प्राचीन काल में अपने पूर्वज, राजा-महाराजा, ऋषि-मुनि, संत-महात्मा निरंतर अश्वमेध, विष्णुयाग, सहस्रकुंडी इत्यादि यज्ञ करते रहते थे। इससे खूब वर्षा होती थी व पर्यावरण शुद्ध और पवित्र होता था, महामारियाँ भी नहीं फैलती थीं।

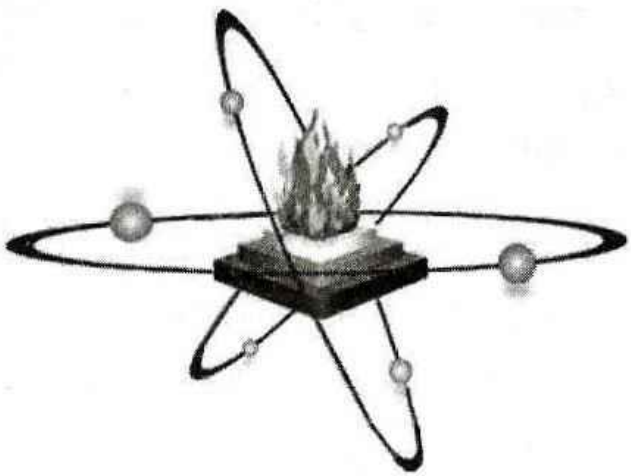

अवकाशीय ऊर्जा (cosmic energy) *का संग्राहक* :

अंतरिक्ष में असंख्य तारे, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह और असंख्य आकाशगंगाएँ हैं। आकाश से दिन-रात अनेक प्रकार की ऊर्जा की वर्षा पृथ्वी पर होती रहती है। उस ऊर्जा को झेलने का कार्य गौ के सींग करते हैं। गाय के सींगों का आकार पिरामिड जैसा होता है। यह एक शक्तिशाली 'एन्टेना' है। सींगों की मदद से गौ सभी अवकाशीय ऊर्जाओं को शरीर में संचित कर लेती है और वही ऊर्जा हमें गोझरण, दूध और गोबर के द्वारा देती है। इसके अलावा गाय की पीठ पर ककुद (डिल्ला) होता है जो कि सूर्य-अवकाशीय कई तत्त्वों को शरीर में दूध, गोझरण तथा गोबर के द्वारा हमें देता है। गोमूत्र अवकाशीय ऊर्जा का भंडार है।

hindustandesh@gmail.com

गोमूत्र चिकित्सा

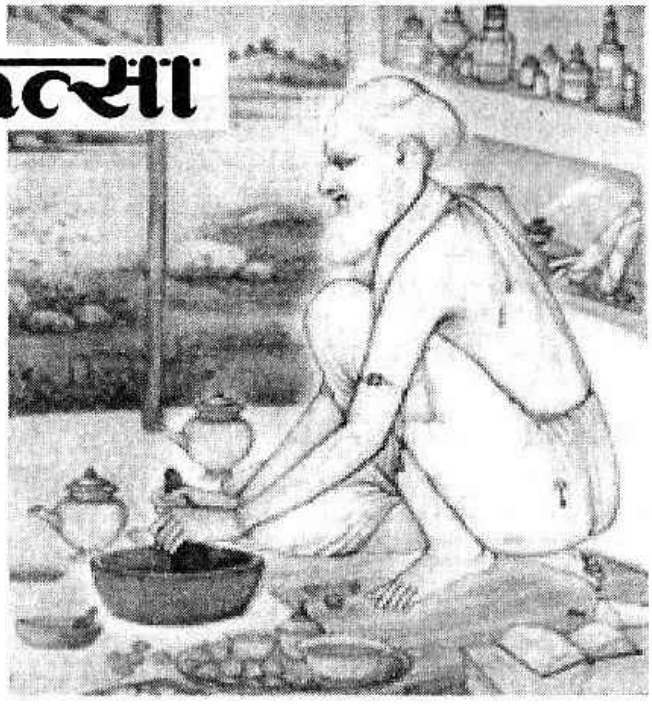

गोमूत्र विषाणुनाशक, रक्तविकार व वात-पित्त कफजन्य विकारों को दूर करने वाला एक श्रेष्ठ एवं पवित्र रसायन द्रव्य है। यह कायिक, मानसिक दोनों प्रकार के रोगों का नाश करता है। गोझरण प्रतिजैविक (एन्टीबायोटिक) है तथा सत्त्वगुण की वृद्धि करता है। यह शरीर में श्वेत रक्तकणों की वृद्धि कर रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाता है। इसके सेवन से शरीरगत विष मल-मूत्र व पसीने के द्वारा बाहर निकल जाते हैं।

गोझरण शरीर के लिए आवश्यक विटामिन ए, बी, सी, डी और इ की पूर्ति करता है। इसके सेवन से प्राणशक्ति बढ़ती है। यह गुर्दे-संबंधी रोग दूर कर गुर्दे की सक्रियता और क्षमता को बढ़ाता है।

* **कब्ज निवारक :** गोझरण कब्जियत मिटाकर आँतों की दीवारों पर जमे हुए वर्षों पुराने मल को दूर कर देता है। मूत्र-विसर्जन के समय पीड़ा होना, पेशाब रुक-रुककर आना अथवा बारम्बार जाना। शिथिलता का अनुभव होना। ये सभी तकलीफें गोझरण के सेवन से दूर होती हैं व स्नायु सक्रिय होते हैं। ज्यादा कब्जियत हो तो गोझरण में दो से तीन ग्राम छोटी हर्रे (हरड़) का चूर्ण मिलाकर ४५ दिन तक निरंतर लें। इसके आधे घंटे पूर्व व बाद में कुछ न लें।
* **कृमिनाशक :** गोझरण कृमिनाशक है। १० से २५ मि.ली. गोझरण बालकों को देने से उनके पेट के तमाम कृमि नष्ट हो जाते हैं। (बड़ों को ५० मि.ली.)।

hindustandesh@gmail.com

* **अपच-मंदाग्नि** : मंदाग्नि के मरीजों को आहार नहीं पचता, भूख नहीं लगती, पेट भारी लगता है, बेचैनी और सुस्ती रहती है। मंदाग्नि के मरीजों को ५० मि.ली. गोझरण में एक चम्मच सोंठ, आधा चम्मच पीपरामूल तथा दो चम्मच शहद डालकर लेना चाहिए। यह प्रयोग ४५ दिन तक करें।
* **दर्दशामक** : गोझरण में दर्दशामक तत्त्व प्रचुर मात्रा में हैं। इसके उपयोग से घुटनों के दर्द, कमरदर्द, सिरदर्द, स्नायुदर्द आदि अनेक प्रकार के दर्दों में राहत देता है। स्नायुओं के दर्द में गोझरण की मालिश की जाय तो राहत मिलती है। दाँत के दर्द में इसके कुल्ले करने से राहत मिलती है।
* **घुटनों का दर्द व संधिवात** : दो चम्मच एरंड का तेल और एक चम्मच सोंठ का चूर्ण गोझरण में डालकर गरम करके खूब हिलाने के बाद लें, इससे तकलीफें दूर हो जाती है।
* **जीभ के रोग** : तम्बाकू आदि व्यसन अथवा अन्य किसी कारण से स्वाद या रस को पहचान नहीं सकते हों तो गोझरण के कुल्ले करने से स्वादेन्द्रिय सचेत हो जाती है।
* **आँख** : छाना हुआ गोझरण पीने और नेत्रों में डालने से नेत्रज्योति बढ़ती है। चश्मे के नंबर कम होते हैं। आँख में से पानी बहना, आँख लाल होना आदि रोग दूर होते हैं। गाय का घी नेत्रों में आँजने से नेत्रज्योति चमत्कारिक रूप से बढ़ती है।
* **कान** : छाना हुआ गोझरण पीने और कान में डालने से कान का मैल दूर होता है, मवाद बहना, कान की खुजली आना बंद हो जाती है तथा श्रवणशक्ति बढ़ती है।
* **त्वचारोग** : गोझरण पीने और गोमय (गोबर का रस) व गोमूत्र मिलाकर मालिश करने से त्वचा के छिद्र खुल जाते हैं, चर्मरोग दू होते हैं और

hindustandesh@gmail.com

पसीने का नियंत्रण होता है।

* **मोटापा नाशक** : गोझरण वात और कफ का नाश कर त्वचा के नीचे एकत्र हुई चर्बी को पिघलाकर मोटापा कम करता है। शरीर को पतला व सुडौल बनाता है। मोटापा कई रोगों का मूल है।
* **रक्तवसा (कोलेस्ट्रोल) नियंत्रण** : गोझरण में अनेक प्रकार के अम्ल (एसिड) व सुपाच्य यूरिक क्षार होते हैं जो अतिरिक्त रक्तवसा (कोले--स्ट्रोल) को दूर करके रक्त को स्वच्छ, जंतुरहित तथा पतला रखते हैं।
* **उत्कृष्ट रोगाणुरोधक (एंटीसेप्टिक)** : शरीर के घावों को गोमूत्र द्वारा धोने से अथवा जले हुए स्थानों पर गोझरण लगाने से वे पकते नहीं हैं। घाव पर गोझरण की पट्टी करने से घाव के जन्तुओं का नाश हो जाता है।
* **प्रभावशाली कीटाणुनाशक** : गोझरण में १६ प्रकार के अम्ल (एसिड) पाये जाते हैं जो वातावरण को जंतुरहित करके पवित्र व आरोग्यप्रद बनाते हैं। इसलिए हिंदू धर्म के सभी १६ संस्कारों व धार्मिक कार्य करने से पहले गोझरण व गोबर का उपयोग किया जाता है।
* **उत्तम विषनाशक** : विषैली रासायनिक खाद और जंतुनाशक दवाओं के कारण अनाज, साग-सब्जी, फल आदि विषैले बनते हैं जिन्हें खाने से शरीर में भी विष पहुँच जाता है। एलोपैथी की दवाओं के कारण भी शरीर में जहर उत्पन्न होता है। ये सभी प्रकार के विष शरीर में जमा होकर कालांतर में कैंसर आदि जैसे घातक रोगों को जन्म देते हैं। ऐसी सभी विष का शमन करने में गोझरण सफल है।
* **यकृत-रक्षक** : गोझरण यकृत (लीवर) के लिए एक असरकारक व बलप्रदायक औषध है। यकृत कमजोर होने से पीलिया जैसे रोग होने की संभावना रहती है। गोझरण यकृत के रोगों को मिटाकर उसकी कार्यप्रणाली को नियमित करके उसे कार्यशील बनाता है।

hindustandesh@gmail.com

* **ग्रंथि भेदन** : गोझरण में अनेक प्रकार के अम्ल(एसिड) होने के कारण कैंसर की गाँठों को चाहे वे रक्त में मिश्रित हों, चाहे मस्तिष्क में हों या शरीर के अन्य किसी भाग में हों, उन्हें पिघलाने में मदत करते हैं। ये एसिड गुर्दे अथवा मूत्राशय की पथरी को भी पिघलाकर शरीर से बाहर निकाल देते हैं।
* **मस्तिष्क बलदायक** : गोझरण ज्ञानतंतुओं को कार्यशील और गतिशील बनाता है जिससे स्मरणशक्ति और बुद्धिशक्ति में बढ़ोतरी होती है। यह दिमाग को शक्ति देता है। अपस्मार या मिर्गी जैसे दिमाग के रोगों को दूर करने में गोझरण मदद करता है।
* **मधुमेह** : दिन में ३ बार ५० मि.ली. गोझरण लें। मीठे पदार्थों का त्याग करें। चावल, आलू, तले हुए तथा स्निग्ध पदार्थ न लें। सुबह-शाम एक-एक घंटा तेज गति से चलें तथा योगासन, कसरत या सूर्यनमस्कार करें।
* **त्वचा के रोग (सोराइसिस, दाद-खाज-खुजली)** : त्वचा के रोगों के लिए गोझरण और गोबर अकसीर इलाज है। सर्वप्रथम गोझरण से मालिश करके बाद में गाय के गोबर से मालिश करें। फिर उसका मोटा लेप करें। मंद धूप में आधे घंटे तक बैठें। पुनः गोझरण से मालिश करें। एक घंटे के बाद नीम के पत्ते डालकर उबाले हुए गर्म पानी से स्नान करें। सुबह-शाम ५० मि.ली. गोझरण पीये। भोजन में खट्टे तले हुए पदार्थ न लें। थोड़े दिन नमक बंद रखें अथवा कम लें।

गोझरण उपयोग में सावधानियाँ

केवल देशी स्वस्थ गाय का ताजा झरण ही उपयोग में लेना चाहिए। गोझरण को ताँबे या पीतल के पात्र में नहीं रखना चाहिए। मिट्टी, काँच, चीनी मिट्टी या स्टील का पात्र में रख सकते हैं। ताजा झरण २४ घंटे तक

hindustandesh@gmail.com

सेवन करने योग्य माना जाता है । झरण का अर्क कुछ लम्बे समय तक उपयोग कर सकते हैं ।

गोझरण अर्क सुबह खाली पेट पानी मिलाकर तत्संबंधी दिये गये निर्देशानुसार लें। गोझरण पीने के १ घंटे पहले व बाद कुछ नहीं खाना चाहिए। सेवन की मात्रा देश, ऋतु, प्रकृति, आयु आदि के अनुसार बदलती रहती है। सामान्यत: व्यक्ति ५० से १०० मि.ली. तक गोझरण सेवन कर सकते हैं।

'गौ स्वास्थ्य वर्धिनी' उपयोगी उपचार

(क) बच्चों को खोखली खाँसी होने पर गोझरण में हल्दी का चूर्ण मिलाकर दें। (ख) जलोदर में मरीज़ केवल गोदुग्ध का सेवन करे। गोझरण में शहद मिलाकर नियमित निर्देशानुसार लें। (ग) प्रसूति के बाद होनेवाले सूतिका (सूवा) रोग में गोझरण लेने से लाभ होता है। (घ) हाथीपाँव रोग में गोझरण सुबह खाली पेट लें। (ड) गोझरण सिर में अच्छी तरह मलकर लगायें। सूखने के बाद धो लें। इससे बाल सुंदर होते हैं। (च) गोझरण में पुराना गुड़ और हल्दी का चूर्ण मिलाकर पीने से दाद, कुष्ठरोग और हाथीपाँव (फाइलेरिया) में लाभ होता है। (छ) उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर) में रोज ५० ग्राम गोझरण सुबह-शाम लें। (ज) १ से ३ ग्राम मोचरस मिश्रीयुक्त दूध से सेवन करने पर स्वप्नदोष मिटता है । (झ) काकड़ासिंगी पानी में घोंटकर लुगदी बना के दूध में मिला के पीने से शक्ति आती है। मात्रा- बड़ों हेतु : १ से ३ ग्राम व बच्चों हेतु : ०.५ ग्राम ।

*** गौदुग्ध** : गौदुग्ध धरती का अमृत है। यह सम्पूर्ण आहार है, साथ ही अमूल्य औषधि भी। बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़े सभीके लिए यह उपयोगी है। यह बल, बुद्धि, स्मृति व रक्तवर्धक, आयुष्य को बढ़ानेवाला रसायन है। 'चरक संहिता' में आता है : **प्रवरं जीवनीयानां क्षीरमुक्तं रसायनम ।**

hindustandesh@gmail.com

अर्थात् **'गोदुग्ध जीवनशक्ति बढ़ाने वाला श्रेष्ठतम रसायन है।'** इससे रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है, बुद्धि कुशाग्र होती है।

*** गौदधि :** गाय के दही में उत्पन्न सूक्ष्म जीवाणु आँतों में विषाणुओं की उत्पत्ति को रोकते हैं। दही मथकर उचित मात्रा में सेवन करने से भूख व पाचनशक्ति बढ़ती है। कैंसर के लिए भी दही एक असरकारक औषधि है।

परम पवित्र पंचगव्य

पंचगव्य गाय के दूध, दही, घी, गौमूत्र, और गोबर के रस को एक निश्चित अनुपात में मिलाने से बनता है। पंचगव्य मनुष्य के शरीर को शुद्ध करके स्वस्थ, सात्त्विक व बलवान बनाता है। इसके सेवन से तन-मन-बुद्धि के विकार दूर होकर

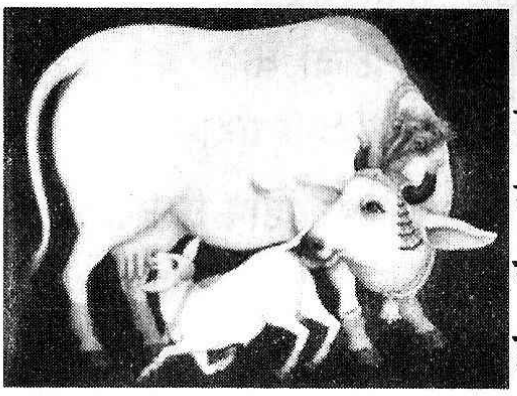

आयुष्य, बल और तेज की वृद्धि होती है। निम्न मंत्र के तीन बार उच्चारण के पश्चात् खाली पेट सेवन करना चाहिए। पंचगव्य सेवन का मंत्र :

यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्॥

॥ गौ-संस्कृति ॥

खेती, गौपालन, बागवानी और इन तीनों से जुड़े हुए उद्योगों (कामकाज) पर टिकी हुई एक जीवन शैली है। गौ-संस्कृति यानी बहुआयामी कृषि प्रणाली पर टिकी हुई जीवन व्यवस्था।

* गौ-संस्कृति आधुनिक विज्ञान की अत्याधुनिक स्थापनाओं और शोधो के आधारभूत तथ्यों पर टिकी हुई है।

*. यह जीवन शैली प्राकृतिक पर्यावरण की विशुद्धता के साथ कम-से-कम छेड़छाड़ करते हुए यानी प्रकृति में जितने भी प्राणी-पशु, पक्षी,

hindustandesh@gmail.com

जल, जीव, जीवाणु आदि है उसके साथ अपना तालमेल बैठाकर जीवन जीने का तरीका है।

* गोबर रेडियोधर्मिता सोखता है एवं ईंधन, खाद की भी आपूर्ति करता है।
* गोसेवा केन्द्रित जीवन-पद्धति, गौशाला केन्द्रित ग्रामोद्योग और गोचर केन्द्रित कृषि से स्थायी, समग्र व संतुलित विकास संभव है।

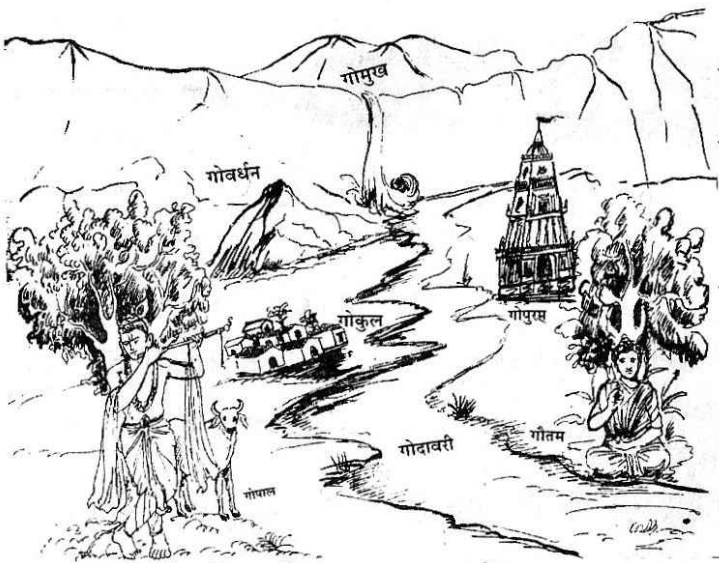

* आधा टन वजन की गाय रात-दिन में १२ सौ वाट की गर्मी देती है। गोवंश लगभग ३० हजार मेगावाट जितनी ऊर्जा देता है। गायों के लिए गौशालाएँ आश्रय स्थल हैं, जो ऊर्जा केन्द्र बन सकती हैं।
* गोधन से विकसित धान्य और धन मानवता को हृदयहीन व जड़ होने से बचाता है।
* आधुनिक सभ्यता प्राकृतिक सम्पदा का अंधाधुंध दोहन कर रही है। पिछले ५०-६० वर्षों से सारी दुनिया का पर्यावरण बुरी तरह प्रदूषित हुआ है। संसार के सभी प्रबुद्ध वैज्ञानिक इस स्थिति से चिंतित हैं।

गौ आधारित कृषि

(क) रासायनिक उर्वरकों का उपयोग खेत की मिट्टी की बनावट पर बुरा असर डालता है और लम्बे समय तक इसका उपयोग खेत को बंजर बनाता है।

(ख) आधुनिक कृषि प्रणाली में रासायनिक कीटनाशकों की भी यही भूमिका है। अनाज, फल और सब्जी उत्पादन में इनका थोड़ा लाभ तो है, पर

hindustandesh@gmail.com

लगातार इनका प्रयोग स्थानीय पर्यावरण यानी मिट्टी, पानी और हवा को जहरीला बनाता है। यह प्रक्रिया घूम फिर कर पास-पड़ोस के सभी प्राणियों-मनुष्य, पालतू पशु, कीट-पतंग और खेत की मिट्टी के जीवाणुओं पर जानलेवा असर डालती है।

(ग) पारंपरिक यानी प्राचीन कृषि शैली में गाय के गोबर का उपयोग ईंधन के कण्डे बनाने या खेती के लिए खाद तैयार करने में होता था। आज हमें गोबर गैस प्लांट, जैविक कम्पोस्ट खाद, बैटरी उत्प्रेरक और केंचुआ खाद इत्यादि में अत्यधिक उपयोग करना चाहिए ।

(घ) गोरस का पहले नाम मात्र का उपयोग हो पाता था लेकिन इन दिनों गोमूत्र औषधि या चिकित्सा और गोमय खेती के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है।

(ङ) डीजल और पेट्रोल की बढ़ती कीमतों के कारण भारत में ट्रैक्टरों से अधिक जुताई और ट्रकों से अधिक ढुलाई बैलों से करके आत्मनिर्भर बना जा सकता है।

(च) कृषि के लिए गोमूत्र व गोबर की खाद एक प्राकृतिक औषधि है। जिससे भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ती हैं। यह पद्धति भारत में हजारों वर्षों से चल रही है।

(छ) गोमूत्र को जब आक, नीम या तुलसी और अधिक मात्रा में जल मिलाकर उबाला जाता है तब वह शुद्ध कीटनाशक के रूप में प्रयोग होती है।

hindustandesh@gmail.com

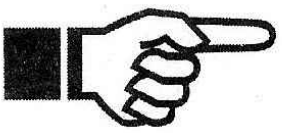

गौहत्या की रोकथाम में हमारा योगदान क्या हो ?

* गाय से प्राप्त दूध, दही, घी , गोझरण व गोझरण युक्त फिनायल एवं गाय के गोबर से निर्मित वस्तुओं को हम अपने दैनिक जीवन की आवश्यकता बना लें। गाय से प्राप्त इन सभी चीजों का अधिक-से-अधिक उपयोग करना भी गाय की सेवा है।

* रोजगार के अवसर देने की दृष्टि से गोपालन सबसे अच्छा साधन है। गौ आधारित उद्योग : फिनायल, धूपबत्ती; अगरबत्ती, अन्न सुरक्षा टिकिया, मच्छर निरोधक क्वायल, गोमय शेम्पू, बर्तन मांजने का पाउडर, गोरस भंडार, गोबर गैस प्लांट इत्यादि ।

* गायों को कसाइयों के हाथों न बेचें। गायों के चमड़े से बनी वस्तुओं जैसे जूता, टोपी, बेल्ट, पर्स आदि का उपयोग बिल्कुल न करें।

* हिंदू संस्कृति में यह नियम था कि भोजन में से गाय के लिए अग्राशन निकाला जाता था, जिसे हम भूल गये। अतः आज से हम नियम लें कि भोजन में से गाय के लिए अग्राशन निकालेंगे।

* गो-ग्रास खिलाने का आग्रह रखें। किसान-परिवार तथा जिनके पास जगह हो वे गौपालन कर गौसेवा का पुण्य व स्वास्थ्य-लाभ अर्जित करें।

गौमाता की दुर्दशा देख उसकी रक्षार्थ भारत के मनीषियों ने अनेकों बलिदान दिये । पूर्वकाल में करपात्रीजी महाराज, संत प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, आचार्य विनोबाजी भावे आदि अनेकों संत-महात्माओं व समाज-सेवकों ने गौवध-विरोधी आंदोलन चलाये।

वर्तमान में गौरक्षा व देश की सांस्कृतिक परम्परा को बचाने के लिए 'संस्कृति रक्षक संघ' ने क्रांति का शंखनाद किया है। आइये, हम सब साथ मिलकर गाय व संस्कृति की रक्षा के लिए आगे बढें।

hindustandesh@gmail.com

गोमांस भक्षण के भीषण दुष्परिणाम

(१) गोमांस एक घातक विषाणु COLI-0157-H-7 को शरण देता है जिससे भोजन पूर्णतया विषाक्त हो जाता है।

(२) गोमांस में डायोक्सिन (DIOXIN) नामक विषैला आर्गेनिक (Organic) रसायन पर्याप्त मात्रा में होता है, जिससे कैंसर, एन्डोमीटिरियोसिस (ENDOMETRISIS), अक्षमता(Deficit), निरंतर थकान, नाड़ीरोग, रक्तविकार तथा रोगप्रतिरोधक क्षमता का ह्रास आदि अनेक रोगों का जन्म होता है।

(३) गोमांस व मज्जा भक्षण से B.S.E., C.J.D. जैसे घातक व भयावह जानलेवा रोग पैदा हो जाते हैं। B.S.E., C.J.D. का कोई उपचार नहीं है और ये AIDS जैसे ही घातक हैं। B.S.E. मस्तिष्क का और C.J.D. जैसा रोग परिवार में वंशानुगत रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचारित हो जाता है। इस प्रकार गोमांस भक्षण से वह वंश ही समाप्त हो जाता है।

(४) गोमांस भक्षण से मानव शरीर में प्रोस्टेगलेंडीन नामक हरमोन उत्पन्न हो जाता है जिसके कारण हृदयरोग और पक्षाघात जैसे जानलेवा रोगों को जन्म देता है।

(५) गोमांस में लम्बी कार्बन श्रृंखलावाले प्रोटीन रहते हैं, गोमांस भक्षक-वात रोग और जोडों के दर्द के शिकार हो जाते हैं।

(६) यूनानी चिकित्सा शोध से पता चला है कि गाय के गोश्त खाने से पागलपन, गठिया और कोढ़ आदि बीमारियाँ हो सकती हैं।

(७) हृदयरोग विशेषज्ञ परामर्श देते हैं कि गाय आदि पशुओं के मांस अचानक हृदय गति रुकने में भूमिका निभाता है।

hindustandesh@gmail.com

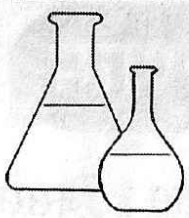

गाय की वैज्ञानिक महत्ता व फायदे

१. एक महान रूसी वैज्ञानिक शिवोरिच के अनुसार गाय के दूध में ''आणविक विकिरणों'' को रोकने की क्षमता है।

२. गाय के गोबर से लीपे हुए घर (हानिकारक) विकिरणों का प्रतिरोध करती हैं।

३. सूर्य की गोकिरण को सोखने की क्षमता मात्र गाय में ही है। गाय के दूध में सुवर्णक्षार पाए जाते हैं ।

४. गायों के चलने की आवाज से स्वत: बहुत सारी मानसिक खराबियाँ एवं बीमारियाँ दूर हो जाती है।

५. मद्रास के प्रसिद्ध डॉ. किंग के अनुसार गाय के गोबर में हैजा के कीटाणुओं को खत्म करने की शक्ति है।

६. क्षयरोग के रोगी को जब गौशाला में रखते हैं तब उसका गाय के गोबर और गोमूत्र की सुगंध से इलाज होता है।

७. यह सिद्ध हो चुका है कि गोमूत्र में ताँबा होता है जो मनुष्य शरीर में जाते ही सोने में परिणत हो जाता है जिसमें रोग-प्रतिरोधक क्षमता है।

८. गाय को पृथ्वी का सबसे बडा वैद्यराज(चिकित्सक) माना गया है ।

संदर्भ :

* गौसेवा अंक (गीताप्रेस गोरखपुर) * चित्रमय चेतावनी - सत्यनारायण मौर्य
* गौवध भारत का कलंक एवं गाय का माहात्म्य, लेखक - हनुमान प्रसाद पोद्दार
* लोक कल्याण सेतु अंक :६२ * गौ-विज्ञान प्रशिक्षण - सुरभि शोध संस्थान
* गोझरण महौषधि : राजस्थान गौसेवा आयोग * protectin of cow - clan
* गौरक्षा - राष्ट्ररक्षा, गौसेवा - जनसेवा, लेखक - गौरीशंकर भारद्वाज
* राष्ट्र के अर्थतंत्र का मेरूदण्ड गौशाला - शांति कुंज, * गौपालन एवं गौशाला प्रबंधन संदर्शिका (शांति कुंज, हरिद्वार)

hindustandesh@gmail.com

वात्सल्यमयी माँ गौ माता

१८५७ की क्रांति - गौ हत्या का विरोध

गौहत्या की रोकथाम में हमारा योगदान क्या हो ?

- गायों का अधिक-से-अधिक पालन करें तथा अन्य लोगों को भी प्रेरणा दें।
- जिस घर में गाय नहीं या गौ की सेवा-पूजा नहीं, वह घर घर नहीं स्मशान है।
- अनजान व्यक्ति तथा कसाइयों को पशु न बेचें। गौवंश को बाहर अकेला न छोड़ें।
- यथासंभव गाय के दूध, छाछ, घी आदि का सेवन करें चाहे कितने ही मूल्य पर मिले।
- जो गाय दूध नहीं देती वह भी बड़ी उपयोगी है। गौ-आधारित उद्योग शुरु किये जायें।

गौ-आधारित उद्योग

कृषि उद्योग

केंचुआ खाद

गौ किटनाशक दवाएँ

गोबर गैस

गौमय रूप निखार (फेस पैक)

गौधूप बत्ती

पंचगव्य घृत

गौ साबुन

गौझरण अर्क

गौ फिनाईल

दर्दनाशक तेल

गौ लोशन

गौमय मल्हम

कामधेनु शैम्पु

मच्छर निरोधक क्वायल, दंतमंजन, गौमूत्र हरड़े चूर्ण, अन्न सुरक्षा टिकिया

गौझरण वटी

दूध, दही, मक्खन, छाछ, घी, मिठाईयाँ

hindustandesh@gmail.com

- १९५१ में १००० की जनसंख्या पर ४३० पशु थे वे आज मात्र २० रह गये हैं।
- आजादी के पहले भारत में ३०० कत्लखाने थे, आज ३६,००० से अधिक वैध तथा ३०,००० से अधिक अवैध कत्लखाने चल रहे है।
- देवनार (मुंबई) कत्लखाना एशिया का सबसे बडा कसाईघर है।
- कत्लखानों में हर साल २७,४६,००० मवेशी मौत के घाट उतार दिये जाते हैं।
- भारत सरकार की प्रति वर्ष ३५ लाख टन गौमांस निर्यात करने की योजना है। इस योजना को लागू करने पर भारत विश्व में गौमांस का सबसे बड़ा निर्यातक बन जायेगा।
- कटती गायों की चीत्कार से पृथ्वी की रक्षा कवच ओजोन परत में २ करोड़ ७० लाख वर्ग किलोमीटर का छिद्र हो गया है, जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है।
- भूकम्प, सुनामी, प्राकृतिक आपदा का कारण कटती गायों की चीत्कार।
- गौ हत्या इसी तरह चलती रही तो २०२० तक प्रलय सम्भव। शीघ्र गौहत्या रोकें।
- गौ-संस्कृति, गौ आधारीत कृषि विज्ञान को बढावा व गौ हत्या की रोकथाम जरुरी।
- गाय के दूध, दही, घी, गोबर, गौ-मूत्र से सम्पूर्ण स्वास्थ व विविध रोगों का उपचार सम्भव।
- गो-मांस भक्षण के भीषण परिणाम व उससे होने वाले रोगों का उपचार असंभव।

यह पुस्तक जनहित में जारी है। कोई भी छपवाकर अथवा मँगवाकर बाँट सकता है। यह देश का सेवाकार्य कोई भी कर सकता है, पक्का देशभक्त देशहित में जरूर करेगा। हमें यह विश्वास है।

संस्कृति रक्षक संघ

आध्यात्मिक भारत निर्माण

मुख्यालय : शास्त्री नगर, दिल्ली-110031. फोन : 011-32674126.
info@srsinternational.org www.srsinternational.org

hindustandesh@gmail.com